Dated- 09/05/2020

Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

Merits and Demerits of Field Experiment Method

क्षेत्र-प्रयोग विधि के गुण एवं अवगुण

(... continued)

क्षेत्र प्रयोग विधि के गुण (Merits of Field Experiment Method)

समाज मनोविज्ञान की समस्याओं के अध्ययन के लिए क्षेत्र-प्रयोग का व्यवहार प्रयोगशाला-प्रयोग से कहीं अधिक होता है। कारण, इसमें निम्नलिखित गुण पाए जाते हैं-

1) **सामजिक तथा शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन हेतु उपयुक्त (Appropriate for the study of social and educational problems) :**

Kerlinger, 1964 के अनुसार क्षेत्र-प्रयोग विधि द्वारा सामजिक तथा शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन समुचित रूप से संभव होता है। कारण, ऐसे अध्ययनों के लिए केवल आंशिक नियंत्रण ही संभव होता है। इस दृष्टिकोण से यह विधि प्रयोगशाला-विधि से बेहतर है। Sherif, 1953 ने समूह-तनाव (group tension) के अध्ययन में इस विधि का सफल प्रयोग किया।

2) **जटिल सामजिक प्रभावों, प्रक्रियाओं तथा परिवर्तनों के अध्ययन के लिए उपयुक्त (Appropriate for the study of complex social influences, processes and changes) :**

Kerlinger, (1964, 2002) के अनुसार जटिल सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के लिए यह विधि काफी उपयोगी है। छोटे समूहों की गतिकी (dynamics) तथा पारस्परिक क्रिया (interaction) के अध्ययन के

लिए यह विधि उपयोगी सिद्ध हुयी है। Coch and French, 1948 ने इस विधि द्वारा उत्पादन, आक्रमण, आदि पर सहभागिता के प्रभाव का अध्ययन सफलतापूर्वक किया।

3) व्यवहारिक समस्याओं के समाधान के लिए उपयुक्त (Appropriate for the solution of practical problems) :

यह विधि व्यवहारिक समस्याओं के समाधान के लिए भी काफी उपयोगी सिद्ध हुयी है। सामजिक तनाव, सांप्रदायिक दंगे, जातिगत दंगे, आदि व्यवहारिक सामजिक समस्याएं हैं जिनके समाधान के लिए यह प्रयोग-विधि प्रयोगशाला प्रयोग-विधि से बेहतर है। इसी प्रकार शैक्षणिक व्यवहारिक समस्याओं के समाधान में यह विधि अधिक उपयोगी है, (Kerlinger, 2002)।

4) अधिक व्यवहारिकता (Greater applicability) :

प्रयोगशाला-प्रयोग की तुलना में क्षेत्र-प्रयोग में व्यवहारिकता अधिक पायी जाती है। इसका क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है। कारण, इसका व्यवहार उस परिस्थिति में भी किया जा सकता है, जिस परिस्थिति में प्रायोहशला-प्रयोग का व्यवहार कठोर नियंत्रण के कारण संभव नहीं है।

5) अधिक लचीलापन (Greater flexibility) :

क्यूंकि क्षेत्र-प्रयोग में नियंत्रण आंशिक या ढीला-ढीला होता है, इस लिए इसमें लचीलापन का गुण उपलब्ध होता है। प्रयोगकर्ता के लिए संभव होता है की वह आवश्यकता के अनुसार कार्यविधि में परिवर्तन ला सकता है। यह गुण प्रयोगशाला-प्रयोग में नहीं है।

6) अधिक स्वाभाविकता (Greater naturalism) :

प्रयोगशाला-प्रयोग की अपेक्षा क्षेत्र-प्रयोग में स्वाभाविकता अधिक पायी जाती है। कारण, प्रयोगशाला-प्रयोग में कठोर नियंत्रण के चलते स्वाभाविकता काफी घट जाती है, जबकि क्षेत्र-प्रयोग में थोड़ा नियंत्रण होने के कारण स्वाभाविकता काफी हद तक कायम रहती है।

क्षेत्र-प्रयोग विधि के दोष (Demerits of Field Experiment Method)

1) यथार्थता की कमी (Lack of precision) :

Kerlinger, 2002 के अनुसार क्षेत्र-प्रयोग में यथार्थता का आभाव पाया जाता है। कारण, इसमें केवल आंशिक या ढीला-ढाला नियंत्रण रहता है। इस लिए परिचालित चर तथा नियत चर में विचलन अधिक उत्पन्न हो जाता है।

2) पूर्ण परिचालन का आभाव (Lack of full manipulation) :

क्षेत्र-प्रयोग में कभी तो परिचालन संभव होता है और कभी संभव नहीं होता है। कुछ सामजिक परिस्थितियां ऐसी होती हैं जहां व्यवहारिक रूप से स्वतंत्र चरों को परिचालित करना संभव नहीं होता है। जैसे- अंतर्व्यक्तिक व्यवहारों (independent variable) पर प्रभाव देखने के लिए एक चर को परिचालित करना सिद्धांत के रूप में भले संभव हो, व्यवहारिक रूप से संभव नहीं है।

3) यादृच्छिकरण की कठिनाई (Difficulty of randomization) :

यह सही है की सिद्धांत के दृष्टिकोण से क्षेत्र-प्रयोग में यादृच्छिकरण के नहीं होने का कोई प्रश्न नहीं है, लेकिन व्यवहारिक रूप से यह बहुत कठिन है। सामाजिक समस्याएं इतनी जटिल होती हैं की यादृच्छिकरण प्रतिदर्श (random sample) बनाते समय बहुत कठिनाई महसूस होती है और सही रुप में यादृच्छिकरण संभव नहीं हो पाता है।

4) ढीला-ढाला नियंत्रण (Loose control) :

क्षेत्र-प्रयोग की यह एक मौलिक कमज़ोरी है। इसी कमज़ोरी के कारण न तो पूर्ण रूप से परिचालन संभव होता है और न यादृच्छिकरण ही।

5) निम्न विश्वसनीयता (Low reliability) :

उपर्युक्त दोषों के कारण इस विधि की विश्वसनीयता प्रयोगशाला-प्रयोग विधि की तुलना में काफी सीमित है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है की समाज मनोविज्ञान में प्रयोगशाला-प्रयोग तथा क्षेत्र-प्रयोग दोनों का उपयोग किया जाता है। परन्तु क्षेत्र-प्रयोग का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक किया जाता है। यह भी ध्यान रखना चाहिए की इन दोनों प्रयोग-विधियों में केवल मात्रा का अंतर है, गुण का नहीं।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email- drhenahussain@gmail.com